Paper-16

प्रेमचंद, गद्यकार के रूप में

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस से दूर लमही गाँव में हुआ था। इनका परिवार मध्यम का था। पिता अजायब राय और माता का नाम आनन्दी देवी था। पिता ने इसका नाम धनपत राय तथा चाचा ने नवाब राय। प्रेमचंद नाम उन्होंने स्वयं रखा। इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। तथा जीवन गरीबी तथा अभाव में बीता। अल्पवयस्क मित्रों के साथ वे 'तिलस्म होशरुबा' के किस्से सुनते थे और इसका खासा प्रभाव प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर पड़ा। (अंग्रेज़ चलक)

हम यूँ कह सकते हैं कि इनका सम्पूर्ण जीवन ही कथा और इनके का विषय था। यही कारण था कि (उन्) उनके लेखन में सहजता और स्वाभाविकता जैसी मिलती है और आम आदमी और उसके परिवेश का जैसा स्वाभाविक चित्रण इनके उपन्यासों में मिलता है वह कहीं अन्य नहीं। प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लिखा। इनकी प्रथम कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' 'ज़माना' में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात 'सवा सेर गेहूँ', प्रेमपचीसी, प्रेम बत्तीसी, प्रेम चालीसा, जादेराह, दूध की कीमत, वारदात, आदि कहानियाँ छपीं। जिनमें ग्रामीण जीवन और परिवेश का अंकन बहुत ही स्वाभाविक रूप में हुआ है। प्रेमचंद ने उर्दू में 178 कहानियाँ लिखीं, जिनका अनुवाद देशी-विदेशी भाषाओं में हुआ।

साहित्य जगत में प्रेमचन्द का पदार्पण 1916 ई० में हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी से इन्हें हिन्दी में लिखने की प्रेरणा मिली और जब वे अनवरत लिखने लगे तो हिन्दी में इनकी लगभग 300 कहानियाँ आयी।

कहानियाँ :— जब इन्होंने कहानी लेखन की शुरुआत की तो हिन्दी में बंगला कहानी का (प्रमुख) प्रभाव अत्यधिक था। और बंगला पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव प्रेमचन्द इसे बखूबी समझते थे और इसी कारण इन्होंने अपनी कला का निर्माण किया और कहानी विधा में अपनी तकनीक विकसित किया। इनकी कहानियों की सरलता और सहजता ही इनकी पहचान है, इनके कथ्य और शिल्प से स्पष्ट दिखाई पड़ता है, कि दैनिक जीवन और वातावरण को कितनी स्वाभाविकता के साथ इन्होंने अपनी कथाओं में चित्रित किया है उनमें यथार्थ और आदर्श का समन्वय है, जहाँ आदर्श है वहाँ यथार्थ की अवहेलना नहीं है, जीवन की व्याख्या सत्यम् शिवम् सुन्दरम और देशकाल के सच्चे चित्र इनके कहानियों की आत्मा है, प्रेमचन्द नैतिकता के पक्षधर थे, और मानवतावादी भावनाओं को सुदृढ़ करने की आकांक्षा रखते थे। अमीर-गरीब, उच्च और नीच हर वर्ग और हर पात्र का इन्होंने बड़ी सहजता के साथ चित्रित किया है, इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानि

विश्लेषण भी है, और आस-पास की कहानियों की श्रेणी में आते हैं। इनके पात्र चरित्र गत और वर्गगत दोनों हैं। प्रेमचन्द की भाषा सहज सम्प्रेष्य है बौद्धिकता प्रधान या भावात्मक नहीं वर्णन स्वाभाविक है, और इसी सरल भाषा के कारण जन साहित्यकार कहे गये हैं, तात्पर्य सामान्य जनों हेतु लिखते रहे। मगर वे मात्र साहित्यकार नहीं थे, महान विचारक भी थे। उन्होंने व्यापक अध्ययन किया था। मानवीय दुर्बलताओं का सही रूप एवं जीवन के (समीप) सजीव चिंतन के कारण उनकी कहानियाँ सहज स्वाभाविकता लिए हुए हैं इसी कारण प्रेमचन्द को मानव जीवन को विराट शिल्पकार कहा जाता है।

प्रेमचन्द यह भी मानते हैं, कि कहानी जीवन का यथार्थ चित्र मात्र नहीं होता. कहानी एक कला है, और कला यथार्थ का मात्र अनुकरण नहीं होती।

कहानी में अनावश्यक शब्द या वाक्य न आये. प्रथम वाक्य ही आकर्षित करे. और अंतिम वाक्य तक मुग्ध करता रहे, कहानी घटना ही नहीं अनुभूति है।

प्रेमचन्द के कहानी संग्रह :-

(i) सप्त सरोज, (ii) बड़े घर की बेटी, (iii) लाल फीता, (iv) नमक का दरोगा, (v) प्रेम पचीसी, (vi) शांति, (vii) अग्नि समाधि, (viii) पाँच फूल

Scanned with Cam

(viii) समर यात्रा, (ix) प्रेम तीर्थ, (x) बैंक का दीवाला, (xi) प्रेम सरोवर, (xii) प्रेरणा, (xiii) प्रेरणा, (xiv) सजीवन, (xv) मानसरोवर के आठ भाग, (xvi) कुत्ते की कहानी, (xvii) हिन्दी की आदर्श कहानी, (xviii) कफन, (xix) नारी जीवन की कहानियाँ (xx) मंगल की कहानियाँ। (xxi) प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानी
(*) प्रथम कहानी - सोजे वतन।

उपन्यास

Tarapad Singh / Sandar

हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द का प्रादुर्भाव होते ही एक नवीन युग का सूत्रपात होता है, हिन्दी में प्रेमचन्द एक नूतन एवं मौलिक दृष्टिकोण लेकर अवतरित हुए। इन्होंने हिन्दी उपन्यास को अपेक्षाकृत अधिक संगठित एवं क्रमबद्ध कथा वस्तु प्रदान करते हुए उपन्यास को मानव जीवन की यथार्थ समस्याओं से संबद्ध करने एवं मानवीय अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रेमचन्द के मतानुसार - "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ, मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"
प्रेमचन्द ने युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ऐसे उपन्यासों की सर्जना की है, जिनके द्वारा समाज को आगे बढ़ने में बल मिलता है। इन्होंने केवल सामाजिक प्रश्नों को ही प्रधानता नहीं दी, अपितु प्रेमचन्द ऐसे पहले कलाकार हैं, जिन्होंने युग-युग से अभिशप्त नारी को धूल से उठाकर पुचकार उसे उसकी क्षमताओं से परिचित कराया।

प्रेमचन्द ऐसे प्रथम कथाकार हैं, जिन्होंने उपन्यास को साहित्यिक गरिमा, सप्राणता एवं विश्वसनीयता प्रदान की।

इन्होंने प्रथम अवस्था में सामयिक परिवेश में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों समस्याओं तथा कुप्रथाओं की वीभिषिका और दुष्परिणामों को व्यापक रूप में वर्णित करके सामाजिकों के मन में उनके प्रति घृणा और वितृष्णा के भाव जाग्रत करके उनके समाधान की ओर भी इंगित किया है।

दूसरी अवस्था में इन्होंने सामाजिक दोषों तथा समस्याओं से संबद्ध व्यक्तियों के हृदय परिवर्तन द्वारा समाज में नवीन चेतना का विस्तार किया है।

अंतिम अवस्था में, प्रेमचन्द के समस्त आदर्शवादी सिद्धान्तों की मिस्सारता और अप्रायोगिकता स्पष्ट होने लगी थी, तथा इनका झुकाव प्रगतिशील विचारों की ओर बढ़ने लगा था। अतः प्रेमचन्द के उपन्यास को कलात्मक विकास की दृष्टि से हम निम्न वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं:-

(i) समाज सुधारवादी उपन्यास, (ii) गाँधीवाद से प्रेरित, (iii) मानवतावादी उपन्यास (iv) सामाजिक यथार्थवादी उप०

(i) समाज सुधारवादी उपन्यास :- प्रस्तुत वर्ग के उपन्यास की केन्द्रीय भावना समाज सुधार रही है, इस वर्ग में वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, निर्मला, गबन, कायाकल्प आदि उपन्यासों को रखा जा सकता है।

वरदान - वरदान में बाल-विवाह, तथा अनमेल विवाह की कुरीति को आधार बनाकर घटनाओं की संयोजना की गई है। विरजन के प्रति कमलाचरण की कुछ समय के उपरांत मृत्यु जहां एक ओर बाल तथा अनमेल विवाह के प्रति वितृष्णा की भावना जाग्रत करती है वहाँ

दूसरी ओर बाल-विधवा के अतृप्त एवं अशांत जीवन पर भी प्रकाश डालती है। निराशप्रेमी प्रतापचन्द्र समाजसेवा के कार्यों में प्रवृत होकर जीवन-यापन करने लगता है।

प्रतिज्ञा :- प्रतिज्ञा में प्रेमचन्द ने अपने इस सुधारवादी कार्य को सफल बनाने के लिए नि: सम्बल एवं वैवमत्य के अभिशाप से अभिशप्त पूर्णा को आधार बनाया है। इसमें उपन्यासकार ने विधवा समस्या के आर्थिक पहलु को अधिक महत्व दिया है।

सेवासदन :- इसमें प्रेमचन्द ने नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं दहेज-प्रथा, अनमेल-विवाह, वेश्यावृति, आदि का निदान सुधारात्मक ढंग से निरुपित किया है। प्रचलित दहेज के अभाव में सुमन का अनमेल-विवाह हो जाता है। जिसके परिणाम स्वरुप सुमन को एक छोटे से अपराध के कारण गृह-निर्वासित होकर कुमार्ग को अपनाना पड़ता है। अत: वेश्या समाज समस्या को सामने रखकर उसका समाधान निकालना प्रेमचन्द के आदर्शवादी तथा भावुक दृष्टिकोण का परिचायक है।

निर्मला :- निर्मला में समुचित दहेज के अभाव में वृद्ध अनमेल विवाह की समस्या को वर्णित करते हुए नारी की कारुणिक जीवन गाथा को अंकित किया गया है विवाह से पूर्व पिता के आकस्मिक हत्या के उपरांत आर्थिक विवशता वश निर्मला का विवाह अधेड़ मुंशी तोताराम से हो जाता है। इसे निर्मला की समस्त नारी सुलभ कामनाएँ तथा जीवन का हर्षोल्लास समाप्त हो जाता है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द की सुधार-भावना का प्रतिफलन निर्मला के इन शब्दों से स्पष्ट होता है:- " बच्चों को आप

की गोद में छोड़ी जाती है, चाहे कुँवारी रखिएगा, चाहे विष देकर मार डालिएगा, पर कुपात्र के गले न मढ़िएगा, इतनी ही आपसे विनम्र है।"

गबन :- गबन में मध्य वर्ग का मिथ्या प्रदर्शन, सम्मान, लालसा, आडम्बर प्रियता आदि से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का निरूपण किया गया है।

कायाकल्प :- कायाकल्प में बहुविवाह, वृद्ध विवाह वृद्ध अनमेल विवाह की समस्या को उठाया गया है। प्रस्तुत कृति में प्रेमचन्द समाज-सुधार से प्रेरित होकर गाँधीवादी दृष्टि की ओर उन्मुख होते हुए लक्षित होते हैं।

(ii) गाँधीवादी से प्रेरित उपन्यास :- राजनीति के माध्यम से किसानों, मजदूरों, शोषित पीड़ित वर्ग के जीवन में नवीन चेतना का जो संचार गाँधीजी ने किया उसी का यथार्थपरक रूपांतर प्रेमचंद के इस वर्ग के उपन्यास हैं। प्रेमाश्रम, रंगभूमि, तथा कर्मभूमि की त्रिवेणी गाँधीवादी जीवन दर्शन को रूपायित करती है। प्रेमाश्रम में राष्ट्रीय समस्याओं को महत्व प्रदान करते हुए प्रेमचन्द ने सत्य और अहिंसा के की विजय को उद्घोषणा की है। इन्होंने ग्रामीण जीवन की समस्याओं को जो कि उस राष्ट्रीय आंदोलन की देन है, जिसने अगणित युवकों को प्रेरणा देकर असहाय एवं पीड़ित जनता को सहयोग प्रदान किया था। प्रेमशंकर के माध्यम से निरूपित किया गया है। रंगभूमि में गाँधीवाद चरमोत्कर्ष काल की रचना है। इसका कथानक अन्याय के प्रतिकार सत्याग्रह, अहिंसा आदि के आधार पर संयोजित हुआ है।

Scanned with Cam

सत्य का अन्वेषक एवं अहिंसा का पुजारी सूरदास आदर्श सत्याग्रही के भाँति आचरण करता हुआ औद्योगीकरण का विरोध करता है। वह सच्चे सत्याग्रही की भाँति (आचरण करता) विजय प्राप्त कर प्रतिपक्षी का उपहास करना सिद्धान्तों के प्रतिकूल मानता है। शारीरिक दृष्टि से अपंग होते हुए भी सूरदास अनेक सम्मिलित शक्तियों का सामना करता हुआ भौतिक दृष्टि से तो पराजित होता है, किंतु प्रतीक दृष्टि से विजय उसकी ही होती है।

कर्मभूमि का प्रणयन सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा संयुक्त प्रांत के किसानों के लगान बंदी आंदोलन के आधार पर हुआ है। अमरकांत छात्र जीवन से ही नियम पूर्वक चरखा चलाया करता था, संध्या के समय जलसों में भाग लेकर रातों को रात्रि पाठशाला में पढ़ाता था। इन सभी कार्यों से वह गाँधीजी के कायिक श्रम सिद्धान्त पर आचरण करता हुआ आत्म शुद्धि लाभ करता है। शिक्षा समाप्ति के बाद वह अपने मित्र सलीम तथा डॉ० शांति कुमार के सहयोग से ग्रामीण जीवन में नई चेतना लाने को प्रयत्नशील है। अछूतों के गाँव में रहता हुआ अपने सद्‌प्रयत्नों द्वारा प्रचलित विभिन्न कुरीतियों का सुधार कर शिक्षा का प्रचार करता है। अंत में जेल यात्रा के बाद सभी यात्रा साहित्य राजनीतिक कार्यों में सफल हो जाने पर अपने स्वर्गों

है साकार की प्रतीति करते हैं।

(iii) सामाजिक यथार्थवादी :- प्रेमचंद प्रारम्भ से ही एक आदर्शवादी रहे हैं। किन्तु अंतिम अवस्था में जीवन के कटु अनुभवों ने आदर्शों के प्रति उनके मोह को भंग कर दिया था। उस समय तक विश्व में सोवियत रूस की क्रांति का प्रभात प्रभाव पड़ चुका था। और कार्ल-मार्क्स के सिद्धान्तों की राजनीतिक परिणति साम्यवाद अथवा प्रगतिवाद रूप में हो रही थी। प्रेमचन्द के लिए भी इस विचार-धारा अप्रभावित रहना संभव नहीं था।

'गोदान' में होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है. वह जीवन पर्यन्त समाज विरोधी शक्तियों - जमींदार के अत्याचार, महाजनों के शोषण तथा ग्रामीण जीवन की कुरीतियों, कुप्रथाओं से उत्पन्न सामाजिक विषमताओं से संघर्ष करता हुआ अंततः असफल रहता है। उसकी असफलता के प्रमुख कारण हैं - आदर्शवादिता, धर्मभीरुता, एवं बिरादरी का भय। गोबर जब शहर में नये वातावरण में रहकर वापस गाँव लौटता है तो ग्रामीण जीवन में व्याप्त सामाजिक विषमताओं तथा कुरीतियों का विरोध करता हुआ नए सामाजिक विचारों का समर्थन करता है। शहर में भी वह मिल मालिक के शोषण के विरोध में हड़ताल करता है। घायल होता है और मिल में आग लगा दी जाती है। इस हिंसात्मक कार्य के द्वारा प्रेमचंद ने श्रमिक वर्ग में चेतना एवं श्रमिक पूंजीपति वर्ग का विनाश दिखाकर समाजवाद अथवा साम्यवाद को उभारा है।

Scanned with Cam